14/01/2026

पर्वत की चोटी पर जीवन के पाठ

जीवन एक अनवरत यात्रा है, जहाँ हर मोड़ पर नए अनुभव हमारा इंतजार करते हैं। कभी-कभी हम अपने आप को एक ऐसे पर्वत (mount) की तलहटी में पाते हैं, जिसकी चोटी बादलों में छिपी होती है। यह पर्वत केवल भौगोलिक संरचना नहीं, बल्कि जीवन की चुनौतियों का प्रतीक है। जैसे-जैसे हम इस पर्वत पर चढ़ते हैं, हम पाते हैं कि रास्ता कभी सरल नहीं होता। हर कदम पर हमें अपनी शक्ति, धैर्य और दृढ़ संकल्प की परीक्षा देनी पड़ती है।

मेरे एक मित्र राजीव की कहानी इस यात्रा का सटीक उदाहरण है। वह एक साधारण मध्यमवर्गीय परिवार से था, जहाँ सपने देखना तो आसान था, लेकिन उन्हें साकार करना पहाड़ चढ़ने जैसा कठिन। राजीव ने बचपन से ही अपने माता-पिता को संघर्ष करते देखा था। उसके पिता एक छोटी सी दुकान चलाते थे, और माँ घर का काम संभालती थीं। लेकिन राजीव के मन में कुछ बड़ा करने की इच्छा थी, वह अपने परिवार की स्थिति को बदलना चाहता था।

शुरुआती दिनों में, राजीव ने जीवन के कई कठोर पाठ सीखे। उसने देखा कि कैसे समाज में कुछ विचार और रवैये इतने जड़ (ossified) हो चुके हैं कि उन्हें बदलना लगभग असंभव लगता है। लोग कहते थे कि गरीब का बेटा केवल गरीब ही रहेगा, कि किस्मत बदली नहीं जा सकती। ये जमे हुए विचार समाज में इतनी गहराई से बैठे थे कि लोग इन्हें सत्य मानने लगे थे। लेकिन राजीव ने इन विचारों को चुनौती देने का फैसला किया।

उसकी इस यात्रा में सबसे बड़ी भूमिका उसकी दादी की थी। दादी एक साधारण महिला थीं, जिन्होंने औपचारिक शिक्षा नहीं पाई थी, लेकिन जीवन के अनुभवों ने उन्हें बहुत कुछ सिखाया था। वे अक्सर राजीव से कहती थीं, "बेटा, जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है सीखने की इच्छा। जो व्यक्ति हर अनुभव से कुछ न कुछ ग्रहण (imbibe) करता है, वह कभी असफल नहीं होता।" दादी की यह बात राजीव के दिल में गहरे बैठ गई।

राजीव ने अपनी पढ़ाई में कठिन परिश्रम किया। वह सुबह जल्दी उठता, पढ़ाई करता, फिर अपने पिता की दुकान पर भी मदद करता। रातें देर तक किताबों में गुजरतीं। उसके सहपाठी अक्सर उससे मजाक करते, कहते कि वह व्यर्थ में मेहनत कर रहा है। कुछ लोग उसकी महत्वाकांक्षाओं का मजाक उड़ाते, कुछ व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ (sass) करते। लेकिन राजीव ने कभी हार नहीं मानी। उसने हर आलोचना को अपनी प्रेरणा का स्रोत बना लिया।

जीवन में कई बार ऐसे पल आते हैं जब हमें अपनी भावनाओं को नियंत्रित (subdued) रखना पड़ता है। राजीव के जीवन में भी ऐसे कई मौके आए। जब उसकी मेहनत के बावजूद परिणाम नहीं मिले, जब परीक्षाओं में असफलता का सामना करना पड़ा, जब समाज की कटु बातों ने उसके आत्मविश्वास को हिला दिया। ऐसे समय में, उसे अपनी निराशा और क्रोध को काबू में रखना पड़ा। उसने सीखा कि भावनाओं का दबाना आवश्यक नहीं, बल्कि उन्हें सही दिशा देना महत्वपूर्ण है।

एक बार की बात है, राजीव को एक प्रतिष्ठित कॉलेज में प्रवेश परीक्षा देनी थी। उसने महीनों तैयारी की थी। लेकिन परीक्षा के एक दिन पहले, उसके पिता बीमार पड़ गए। पूरी रात अस्पताल में गुजरी। सुबह जब वह परीक्षा देने गया, तो थका हुआ और मानसिक रूप से परेशान था। परीक्षा अच्छी नहीं हुई। वह घर लौटा तो टूट चुका था। लेकिन उसकी दादी ने उसे समझाया, "बेटा, जीवन हमेशा परीक्षा लेता है। असली सफलता इसमें नहीं कि तुम कभी गिरे नहीं, बल्कि इसमें है कि गिरने के बाद तुम कितनी जल्दी उठ खड़े होते हो।"

इस घटना ने राजीव को एक महत्वपूर्ण सबक सिखाया। उसने समझा कि जीवन रूपी पर्वत पर चढ़ाई में कभी-कभी फिसलन भी आती है, कभी रास्ता भटक भी जाते हैं। लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि हम फिर से खड़े हों और आगे बढ़ें। उसने अगले साल फिर से परीक्षा दी, और इस बार उसकी मेहनत रंग लाई। उसे एक अच्छे कॉलेज में दाखिला मिला।

कॉलेज में राजीव ने न केवल पढ़ाई पर ध्यान दिया, बल्कि हर अनुभव से कुछ सीखने की कोशिश की। वह समझ गया था कि शिक्षा केवल किताबों से नहीं मिलती। जीवन के हर पहलू से, हर व्यक्ति से, हर स्थिति से कुछ न कुछ ग्रहण करना चाहिए। उसने विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया, अलग-अलग पृष्ठभूमि के लोगों से मित्रता की, और अपने दृष्टिकोण को व्यापक बनाया।

समय के साथ, राजीव ने पाया कि समाज के वे जड़ हो चुके विचार जिन्होंने कभी उसे रोकने की कोशिश की थी, धीरे-धीरे टूट रहे थे। उसकी सफलता ने यह साबित कर दिया कि परिस्थितियाँ व्यक्ति की नियति नहीं तय करतीं। उसकी मेहनत और दृढ़ संकल्प ने न केवल उसके जीवन को बदला, बल्कि उसके परिवार और समुदाय के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन गया।

आज राजीव एक सफल इंजीनियर है। उसने अपने माता-पिता के सपनों को साकार किया है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उसने अपनी यात्रा के दौरान जो मूल्य और सबक सीखे, वे उसके व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा बन गए हैं। वह आज भी विनम्र है, आज भी सीखने के लिए तैयार रहता है।

राजीव की कहानी हम सभी के लिए एक सीख है। जीवन में हमें कई पर्वतों पर चढ़ना पड़ता है। कभी ये पर्वत शिक्षा के होते हैं, कभी करियर के, कभी व्यक्तिगत संबंधों के। हर पर्वत की चढ़ाई अलग होती है, हर रास्ता अपनी चुनौतियाँ लेकर आता है। लेकिन यदि हम दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें, हर अनुभव से सीखें, और अपनी भावनाओं को सही दिशा दें, तो कोई भी शिखर अप्राप्य नहीं।

समाज में कई बार हम ऐसे लोगों से मिलते हैं जो अपनी कटु टिप्पणियों और नकारात्मकता से हमें हतोत्साहित करने की कोशिश करते हैं। लेकिन हमें यह समझना चाहिए कि ऐसे लोग अक्सर अपनी असफलताओं और असुरक्षाओं का शिकार होते हैं। उनकी बातों को दिल पर नहीं लेना चाहिए। बल्कि, हमें अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहना चाहिए।

जीवन में कई बार हमें अपनी भावनाओं को संयमित रखना पड़ता है। यह कमजोरी का नहीं, बल्कि परिपक्वता का संकेत है। जो व्यक्ति अपनी भावनाओं का स्वामी होता है, वह जीवन की किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकता है। क्रोध, निराशा, भय - ये सभी स्वाभाविक भावनाएँ हैं, लेकिन इन्हें अपने ऊपर हावी नहीं होने देना चाहिए।

समाज में जो पुरानी और जड़ हो चुकी सोच है, उसे बदलने के लिए हमें खुद को उदाहरण बनाना होगा। राजीव ने यही किया। उसने अपने कार्यों से साबित किया कि परिवर्तन संभव है। आज वह न केवल अपने परिवार का, बल्कि अपने समुदाय के कई युवाओं का मार्गदर्शक है। वह उन्हें बताता है कि सफलता के लिए केवल सपने देखना काफी नहीं, उन्हें साकार करने के लिए कठिन परिश्रम और निरंतर प्रयास आवश्यक है।

अंत में, जीवन रूपी इस पर्वत की यात्रा में सबसे महत्वपूर्ण है - सीखने की, ग्रहण करने की क्षमता। हर दिन नए अनुभव लाता है, हर व्यक्ति कुछ नया सिखाता है। यदि हम खुले मन से इन अनुभवों को अपनाएँ, तो जीवन एक सुंदर यात्रा बन जाती है। चाहे मार्ग में कितनी भी बाधाएँ आएँ, चाहे कितने भी लोग हमारा मजाक उड़ाएँ, यदि हम अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहें, तो सफलता निश्चित है।

राजीव की कहानी हमें यह याद दिलाती है कि जीवन में कोई भी परिस्थिति स्थायी नहीं होती। जो आज कठिन लगता है, वह कल आसान हो सकता है। जो आज असंभव प्रतीत होता है, वह कल हकीकत बन सकता है। बस आवश्यकता है विश्वास की, मेहनत की, और सीखते रहने की इच्छा की।

विपरीत दृष्टिकोण: क्या संघर्ष ही एकमात्र रास्ता है?

हम अक्सर ऐसी कहानियाँ सुनते हैं जहाँ नायक अपार कठिनाइयों से गुजरता है, रात-दिन परिश्रम करता है, समाज की आलोचनाओं को झेलता है, और अंततः सफलता के शिखर पर पहुँच जाता है। राजीव की कहानी भी ऐसी ही है। लेकिन क्या यह दृष्टिकोण पूर्णतः सही है? क्या हम अनजाने में एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा नहीं दे रहे जो अनावश्यक संघर्ष को महिमामंडित करती है?

सबसे पहले, यह विचार कि "पर्वत पर चढ़ना ही जीवन का उद्देश्य है" एक सीमित दृष्टिकोण हो सकता है। हर व्यक्ति को किसी ऊँची चोटी पर चढ़ने की आवश्यकता नहीं है। कुछ लोग घाटी में ही संतुष्ट और खुश रह सकते हैं। समाज ने एक ऐसा ढाँचा बना दिया है जहाँ "सफलता" की परिभाषा बहुत संकीर्ण है - पैसा, पद, प्रतिष्ठा। लेकिन क्या एक साधारण जीवन जीने वाला व्यक्ति असफल है? क्या राजीव के पिता, जो एक छोटी दुकान चलाते थे और अपने परिवार का पालन-पोषण करते थे, असफल थे?

राजीव की कहानी में एक खतरनाक संदेश छिपा है - कि यदि आप पर्याप्त मेहनत नहीं करते, यदि आप रात-दिन नहीं जूझते, तो आप पर्याप्त नहीं हैं। यह सोच आज के युवाओं में बर्नआउट, अवसाद और चिंता की महामारी का एक प्रमुख कारण है। हम "हसल कल्चर" (hustle culture) को इतना बढ़ावा देते हैं कि स्वास्थ्य, मानसिक शांति और व्यक्तिगत संबंध सब पीछे छूट जाते हैं।

दूसरा, यह धारणा कि "जड़ विचारों को तोड़ना चाहिए" भी विवादास्पद है। हाँ, कुछ पुरानी सोच हानिकारक होती है और उसे बदलना आवश्यक है। लेकिन हर परंपरागत विचार गलत नहीं होता। कभी-कभी समाज की सलाह, जिसे हम "जड़ विचार" कह देते हैं, वास्तव में अनुभव से निकली बुद्धिमत्ता होती है। हर युवा पीढ़ी को यह सोचना कि पिछली पीढ़ी की हर बात गलत है, एक प्रकार का अहंकार भी हो सकता है।

राजीव की कहानी में उसकी दादी का किरदार दिलचस्प है। वे कहती हैं कि "हर अनुभव से कुछ ग्रहण करो।" यह सुंदर विचार है, लेकिन क्या व्यावहारिक? आज की तेज़ रफ़्तार दुनिया में, जहाँ सूचना की बाढ़ है, क्या हर अनुभव से सीखना संभव है? कभी-कभी हमें चीजों को जाने देना भी सीखना चाहिए। हर असफलता एक पाठ नहीं होती, कभी-कभी यह बस एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना होती है।

तीसरा बिंदु, भावनाओं को "संयमित" रखने का विचार भी समस्याग्रस्त हो सकता है। हाँ, आवेग में आकर निर्णय लेना गलत है, लेकिन भावनाओं को लगातार दबाना मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। राजीव ने अपनी निराशा और क्रोध को "काबू में रखा" - यह अच्छा लगता है, लेकिन वास्तव में क्या उसने उन भावनाओं को स्वस्थ तरीके से व्यक्त किया? या उसने उन्हें दबा दिया? भावनाओं को महसूस करना, स्वीकार करना, और उनके साथ जीना भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उन्हें नियंत्रित करना।

चौथा, यह विचार कि "समाज की कटु टिप्पणियों को नजरअंदाज करो" भी पूरी तरह सही नहीं है। कभी-कभी आलोचना में सच्चाई होती है। हर व्यंग्यात्मक टिप्पणी पीछे खींचने का प्रयास नहीं होती, कुछ वास्तविक चिंता या सलाह हो सकती है। यदि हम हर आलोचना को "नकारात्मकता" मानकर खारिज कर दें, तो हम महत्वपूर्ण फीडबैक से वंचित रह सकते हैं।

पाँचवाँ, राजीव की कहानी "सर्वाइवरशिप बायस" का एक उदाहरण है। हम उन लोगों की कहानियाँ सुनते हैं जो सफल हो गए, लेकिन उन हजारों लोगों की नहीं जिन्होंने उतनी ही मेहनत की, उतना ही संघर्ष किया, लेकिन फिर भी सफल नहीं हुए। सफलता केवल मेहनत का परिणाम नहीं होती, इसमें किस्मत, अवसर, सामाजिक पूँजी, और कई अन्य कारक भी शामिल होते हैं।

छठा, यह कहानी एक व्यक्तिगत समाधान को प्रस्तुत करती है एक सामाजिक समस्या के लिए। गरीबी, असमानता, सामाजिक भेदभाव - ये संरचनात्मक समस्याएँ हैं। राजीव के सफल होने से यह साबित नहीं होता कि "कोई भी कर सकता

है।" बल्कि, हमें समाज की संरचना को बदलने की आवश्यकता है ताकि सभी को समान अवसर मिलें, न कि यह उम्मीद करें कि हर कोई असाधारण मेहनत और संघर्ष से अपनी परिस्थितियों को बदल दे।

सातवाँ, यह कहानी "टॉक्सिक पॉजिटिविटी" का एक रूप भी हो सकती है। हर समस्या का समाधान सकारात्मक सोच और कड़ी मेहनत नहीं है। कभी-कभी लोगों को वास्तविक मदद की आवश्यकता होती है - आर्थिक सहायता, मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ, सामाजिक समर्थन। यह कहना कि "बस मेहनत करो और सफल हो जाओगे" उन लोगों के संघर्षों को कम आँकना है जो वास्तव में प्रणालीगत बाधाओं का सामना कर रहे हैं।

आठवाँ, कहानी में राजीव के व्यक्तिगत जीवन, उसके संबंधों, उसके मानसिक स्वास्थ्य का कोई उल्लेख नहीं है। क्या उसने इस संघर्ष में अपनी युवावस्था खो दी? क्या उसके दोस्त थे? क्या उसे प्यार करने का, जीवन का आनंद लेने का समय मिला? सफलता यदि इन सबकी कीमत पर आए, तो क्या वह वास्तव में सफलता है?

अंत में, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हर व्यक्ति की यात्रा अलग होती है। राजीव का रास्ता उसके लिए सही था, लेकिन यह एकमात्र या सर्वोत्तम रास्ता नहीं है। कुछ लोगों के लिए, संतुलन, शांति, और मध्यम जीवन अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है। हमें विभिन्न जीवन शैलियों का सम्मान करना चाहिए, न कि एक ही प्रकार की "सफलता" को महिमामंडित करना चाहिए।